VOL- VII ISSUE- X OCTOBER 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

भारतीय साहित्य की समस्याएँ

डॉ.मा.ना.गायकवाड
हिंदी विभाग
कै.व्यकंटराव देशमुख महाविद्यालय बाभळगाव

प्रस्तावना :

सामान्यतः यही प्रश्न सामने आता है कि, भारतीय साहित्य किसे कहा जा सकता है ? भारत की राज्यभाषा हिंदी है, तो हिंदी में ही लिखा गया साहित्य भारतीय साहित्य है ? भारतीय संविधान के अनुसूचि में 22 भाषांओ का उल्लेख किया गया है। क्या उन्हीमें से लिखा गया ही भारतीय साहित्य है ? विदेशी भाषा में भारत में भारत के लिए लिखा गया साहित्य भारतीय साहित्य नही है ? भारत में लोकतंत्र है। धर्मनिरपेक्षता भारत का एक स्तंभ है। इसीलिए भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती है। आज भारत में करीब–करीब 19569 भाषाएँ बोली जाती है तथा लिखि भी जाती है। अनुसूची की 22 भाषाएँ अपने विकास और राष्ट्रीय अथवा राज्य के स्तर पर समान नही है। निःसंदेह सभी क्षेत्रीय भाषाओं को आजादी के बाद विशेष प्रोहात्सान मिला है। विदेशी भाषा होने के बावजूद भी अंग्रेजी आज सहायक राजकीय भाषा तथा बहुत अधिक प्रभावी सम्पर्क भाषा के रुप में भारत के बाहर और अंदर दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। साथ ही भारतीयों ने भी सृजनात्मक लेखन और बौध्दिक अनुचिंतन के क्षेत्र में अंग्रजो ने अपना योगदान दिया है। जैसे अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया जाता है। उसी प्रकार संस्कृत भाषा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सच तो यह है कि, भारत की कोई भी महत्वपूर्ण भाषा या साहित्य ऐसा नही है जो संस्कृ–त और उसके महान साहित्य से प्रभावित न हो। संस्कृत की सहायता के बिना पारम्पारिक भारतीय संस्कृति का बोध असंभव है।

आधार भाब्द : भारतीय संविधान, धर्मनिरपेक्षता , सृजनात्मक लेखन , सांप्रदायिक सौहार्द , धार्मिक ग्रंथ , राष्ट्रीयता ।

भारतीय साहित्य की प्राचीनता की दृष्टि से संस्कृत के बाद तमिल का नाम आता है। भारत के सभी भाषाओं में साहित्य लिखा जाता रहा है। अतः प्रांतीय या क्षेत्रीय भाषाओं में भी रचित साहित्य अंततः भारतीय साहित्य है। सभी प्रांतीय भाषाओं अपनी सीमाएँ बनी हुई। लेकिन हिंदी भाषा की कोई सीमा नही। इसीलिए भारत में सबसे अधिक भारत तथा देश के बारे में हिंदी में ही अधिक लिखा गया है। कन्नड, मलयालम, लोकजीवन आदि को प्रतिबिम्बित करता है, वह भी भारतीय साहित्य है। जिस किसी भी प्रांतीय भाषा में जब कभी भी राष्ट्रीय संदेश की जो साहित्य नाहक रहा है वह सब भारतीय साहित्य है। अर्थात पूरे राष्ट्र के अंदर जनता की सामान्य भावना, उनका सुख–दुख, संघर्ष, यश, दिशादर्शन से सम्बधित बातों को चित्रित करनेवाला किसी भी भाषा में लिखा हुआ प्रत्येक साहित्य भारतीय साहित्य है। साहित्य में जिस मिठ्ठी का गंध आता है वह साहित्य उसी मिठ्ठी के देश का माना जाता है। वहाँ यह महत्वपूण्र नही है कि, वह विदेशी भाषा में लिखा गया हो या विदेशी लेखक ने लिखा हो। जिसमें भारत के संपूर्ण राज्यों के या सभी प्रांतीय भाषाओं में लिखा गया साहित्य निहित होता है।

संपूर्ण भारतीय साहित्य को अगर हम देखते है तो, धर्म के प्रति आस्था तो कही विद्रोह, सांप्रदायिक सौहार्द तो कही सांप्रदायिकता का विरोध, देश की एकता और अंखडता, मानवतावादी दृष्टिकोण, विश्व बंधुत्व की भावना आदि बाते स्पष्ट रुप से सामने आती है।

इतने विस्तृत भारतीय साहित्य के अध्ययन की अनेक समस्याएँ सामने आती है। जो निम्नलिखित है।

भारतीय साहित्य इतना विस्तृत है कि, अध्ययन करते समय उसकी सीमा निर्धारण करना अत्यंत कठीन काम है। कोई भी अध्ययन करने के लिए उसकी सीमा तय करन आवश्यक है। लेकिन पाठक तथा अध्ययन कर्ता कितना भी विव्दान क्यों न हो वह भारतीय साहित्य अध्ययन की सीमा तय नही कर सकता। भारतीय साहित्य प्राचीन काल से आजतक लिखा जा रहा है। भारतीय साहित्य की सीमा निर्धारण पर विव्दानो में एकमत नही है। यह अध्ययन की सीमा आज तक विवादित रही है। इस विवाद के अनेक कारण विव्दानोनें स्पष्ट किए है। जब संस्कृत का बोल–बोला था तब अधिक मात्रा में धार्मिक ग्रंथ लिखे गये। और संस्कृत भाषा जनसामान्य की भाषा नही थी। इसीलिए सामान्य पाठक इससे टूटता गया। यही बात बुध्द के काल में तथा बुध्द के पश्चात हुई। पाली जाननेवाला वर्ग केवल बौध्द धम्म से सम्बधित था। पाली उन्ही की भाषा थी। इसीलिए पाली में लिखा गया साहित्य सामान्य व्यक्ति तक नही पहुचाँ। 'प्राकृत' जैनो से संम्बधित भाषा बन गई। इसका संम्बध भी जैनों के साथ ही आया। किसी भी भाषा को किसी धर्म का लेबल लगता है तो दूसरे धर्म के अनुयायी उसकी ओर अलग भाव से देखते है। भारतीय साहित्य ऋग्वेद से लेकर रामचरितमानस से गजरते हुए, अमीर खुसरो और भारतेंदू हरिश्चंद्र से सम्पर्क करते हुए संविधान में लिखित सभी भाषा प्रांतीय या क्षेत्रीय भाषाओं तक फैला हुआ है। इतने विस्तृत रुप में फैले हुए भारतीय साहित्य की पहचान होना कठीन काम है इसीलिए विवाद होना जाहीर बात है और फिर भारतीय साहित्य मानने और न मानने पर बात आ जाती है। यह सभी विविद निर्माण होते है साहित्य के विस्तृतता के कारण इसीलिए भारतीय साहित्य का अध्ययन की सुविधा के लिए समय और सीमा में बांध दिया जाता है तो अनेक सारे प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे। कोई भी विद्वान बगैर समय सीमा निर्धारण के अध्ययन नही करता। संस्कृत, पाली, प्राकृत, और अपभ्रंश आदि रचनाओं को भारतीय के अंतर्गत रखनी चाहिए। क्योकि इसमें अधिक साहित्य सृजन हुआ है। यह साहित्य सृजन समाज हितोपदेश के लिए अत्यावश्यक है। लेकिन वास्तव में यह सामान्य पाठकों से कोसो दूर है। अतः यह स्पष्ट है कि, भारतीय साहित्य का अध्ययन करने की सीमा निर्धारण अत्यावश्यक है।

भारतीय साहित्य की दूसरी समस्या सामने आती है कि, वो भाषा की विविधता। भारत में भारोपिय परिवार और द्रविड परिवार की भाषाएँ अधिकतर बोली जाती है। द्रविड परिवार से निकली भाषाएँ तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड है। भारोपिय परिवार की भाषाएँ बंगला, हिंदी, ऊर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, उडिया, गजराती, मराठी आदि भाषाएँ है। अतः भारत यह बहुभाषिक देश है। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती है। भारत में जितने राजाओं ने राज किया वे एक विशिष्ट जाति के थे। उन्होनें अपने–अपने धार्मिकता पगडा भारी रहा किया। उनकी अलग–अलग भाषा यहाँ की राजभाषा बनी रही। उसी भाषा में उस काल का साहित्य बनता रहा। संपूर्ण भारत में संम्पर्क भाषा के रुप कोई भी भाषा नही थी। बंगला भाषा में एक से बढ़कर एक साहित्यकार होकर चले गये। रवींद्रनाथ ठाकूर, बंकिम चंद्र चटोपाध्याय, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय, विभूतिभूषण, मुखोपाध्याय, शंकर, आशापूर्णा देवी आदि की श्रेष्ठ रचनाएँ मानी जाती है। इनकी कुछ रचनाएँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त रचनाओं का जब तक अनुवाद नही होता, तब तक वे रचना सामान्य जनता तक या अधिक लोगों तक पहुचती नही है। जो अधिक प्रसिध्द होती है उसकी अनुवाद अन्य भाषाओं में होता है शेष सभी रचनाएँ अपनी–अपनी भाषाओं में सीमित ही रहती है। यह वस्तुतः उग्र क्षेत्रीयता का दुष्परिणाम है या राजनीतिक कुचक्र ही है। भारत में हिंदी बोलनेवाले और लिखनेवाले तथा सीखनेवाले की संख्या सबसे अधिक रहते हुए भी बहुमत का तीरस्कार कर या बहुमत को नजरान्दाज कर 'राष्ट्रभाषा' के नाम पर विवाद और वितंछ खडा किया जाता है। भारत की बहुभाषिकता विविधता में एकता का प्रदर्शन भले ही हो सकता है लेकिन बहुभाषिकता भारतीय साहित्य की समस्या ही है। आज भी दर्जनों उच्च कोटि का साहित्य अपनी–अपनी प्रांतीय भाषाओं में सड रहा है। वो अनुवाद के बिना कोसो दूर नही जा पा रहा है। लेकिन अनुवाद कर लोगो तक क्यों नही पहुचाया जाता यह एक अलग विवाद बिंदू है। रचनाओं का अनुवाद करना यह दूसरी प्रक्रिया है। बहुभाषिकता को

समाप्त करने के लिए अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत होना चाहिए।

राष्ट्रीयता की प्राथमिकता भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। राष्ट्रीय भावना भारतवासियों के तनम न में होना चाहिए। प्रांतीय संस्कृति की आस होनी चाहिए। हर एक प्रांतवासियों की भावना, उनका दुखः, मनोभावना, सस्कार, विद्रोह उसी भाषा में होता है। वह जनने की भावना प्रत्येक देशवासियों के मन में होनी चाहिए। तभी वो साहित्य पढ़ने का प्रयास करेंगे। परंतु राष्ट्र में धार्मिकता के कारण राष्ट्रप्रेम में बाधा आ सकती है। अपने–अपने धर्म प्रिय होने के कारण राष्ट्रीयता मार खाती है। भारत में सबसे अधिक जनसंख्या हिंदू की है। सभी धर्मो के एक–एक प्रर्वतक या संस्थापक दिखायी देते है। लेकिन हिंदू धर्म का कोई संस्थापक नही है। हिंदूओ के विभिन्न धर्म प्रेमी आचार्य, संत विभिन्न मार्गोसे ईश्वरीय सत्ता की ओर बढ़ रहे है। अपनी–अपनी सुविधा के अनुसार विभिन्न मार्गो का अविष्कार कर रहे है, और अपने भक्तों को उसी राह पर ले जाने का प्रयास कर रहे है। भारत के ऐसे सिध्द महापुरुष या धर्माचार्य सांस्कृतिक एकता और धर्मचेतना को लेकर चिंतित है। इसका प्रभाव राष्ट्रीयता हो रहा है,उसकी चिंता उन्हे नही है। अतः उन सभी धर्मोचार्यो ने राष्ट्रीयता के साहित्य को अपना साहित्य मानकर भारतवासियों के सामने लाया होता तो भारतीय साहित्य की एक समस्या समाप्त होकर उसका प्रचार–प्रसार अधिक होता था। विभिन्न धर्मो की भावनाएँ एक राष्ट्रीयता के ध्वज के नीचे होनी चाहिए। जिस प्रकार समाज में धर्मोत्सव के लोग अपने मने से इकठ्ठा होते है। धार्मिक त्यौहार मनाते है। उसी प्रकार राष्ट्रीयता के संदर्भ में होना चाहिए। आज राष्ट्रीय त्यौहार के लिए लोग इकठ्ठा होते है, लेकिन वो सरकारी फरमान के कारण होते है। भारत बहुभाषी देश है, हमारे त्यौहार, पोशाख, रीतिरिवाज, खान–पान सब अलग–अलग है। लेकिन राष्ट्र ध्वज तिरंगा के नीचे हम सब धर्मनिरपेक्ष है, सभी एक है। यही हमारी राष्ट्रीयता की भावना होनी चाहिए।

हर एक विधा में उसका अपना इतिहास होता है। विधा के इतिहास लेखन का प्रश्न अत्यंत मंथनीय है। उसी प्रकार भारतीय साहित्येतिहास लेखन में कई गहरी समस्याएँ है। भारतीय साहित्य का काल विभाजन करना अत्यंत जटील काम है। जिस प्रकार हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रति एक प्रकार की काल गणना बांधी गयी उसी के अनुरुप हिंदी साहित्य का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार काल निर्धारण की सीमा भारतीय साहित्य में नही है। उसे अंकित करना अध्ययन की सुविधा के लिए आवश्यक है। भारत में साहित्य का सृजन वैदिक काल से होता आ रहा है। लेकिन उस साहित्य के इतिहास का लेखन करने की बात, कहाँ और कैसे चली यह सोचनीय बात है। भारतीय साहित्य इतिहास लेखन की प्रवृत्ति वस्तुतः अंग्रेजो से पैदा हुई। लेकिन उनके द्वारा लिखा गया साहित्य इतिहास ना तो प्रौढ़ माना जाता है नही प्रामाणिक। अंग्रेजी की यह परम्परा हिंदी इतिहासकारों में आ गयी। शिव सेंगर, मिश्रबंधु, आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इतिहास लेखन आरंभ किया। हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास को प्रामाणिक माना जाता है। वैसे भारतीय साहित्य इतिहास छोडकर कोई भारतीय साहित्यकार विशेष महत्वपूर्ण नही है। भारतीय इतिहास की कालगणना करना अत्यंत कठीन काम है। इसकी काल गणना करने के लिए वैदिक काल को ही मालूम नही कि, उसका काल कौनसा है तो सामान्य इतिहासकार क्या लिखेंगे। भारतीय साहित्य का इतिहास लिखने के लिए प्रांतीय साहित्य का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। प्रांतीय भाषाओं का अध्ययन अर्थात संपूर्ण भारत में बोली जानेवाली भाषाओं का अध्ययन है। कोई भी व्यक्ति अधिक से अधिक 5–6 भाषाओं का अध्ययन कर सकता है लेकिन करिब–करिब 19000 से उपर की भाषाओं का अध्ययन करना इतना सरल काम नही तथा किसी अकेले का काम नही है। प्रांतीय भाषाओं को छोडकर यदि काल के अनुरुप भी अध्ययन करने की बात करता है, तो बौध्दिक काल से आज–तक का कितना लंबा समय है। इस काल के बीच कितना परिवर्तन आया होगा यह सारा ध्यान में रखना जरुरी है, और उसे प्रामाणिक के साथ प्रस्तुत करना कितना कठीण काम है। अर्थात भारतीय साहित्य की समस्याओं का मूल कारण है। इतिहास लेखन इतिहास लेखन सुविधा जनक पाठकों को दी जाती है। तो धीरे–धीरे अध्ययन होने लगता है।

सारांष :

भारतीय साहित्य का अध्ययन करने के लिए मुख्यतः दो भाषा प्रवाह दिखाई देते है। 1) भारोपिय

परिवार 2) द्रविड परिवार इन दो परिवारों से सम्बंध सभी प्रांतीय भाषाओं में सृजित साहित्य भारतीय साहित्य है। दूसरी काम यह है कि, जिस साहित्य में भारत की जनता का मनोभाव है। जो भारत के किसी भी अंग के संदर्भ में लिखा गया हो चाहे वह किसी भी भाषा में हो या किसी विदेशी लेखन ने लिखा हो वह भारतीय साहित्य है। ऐसे सभी प्रांतीय साहित्य का अध्ययन करना अंत्यत कठीन काम है। सारी कठीनाईयाँ तथा समस्याओं पर अध्ययन करने के पश्चात कुछ तथा सामने आते है।

1) भारतीय साहित्य जनसामान्य तक जाने के लिए अनुवाद का क्षेत्र बढ़ाना चाहिए। मात्र अनुवाद के माध्यम से ही प्रांतीय रचनाओं अनुदित कर संपूर्ण भारत वर्ष में फैलाया जा सकता है।

2) हिंदी साहित्य के इतिहास के समान भारतीय इतिहास के समान भारतीय साहित्य इतिहास का लेखन होना चाहिए।

3) सभी भारतवासियों के मन में जितनी चाह राष्ट्रीयता के लिए होती है उतनी ही चाह प्रांतीय साहित्य के लिए होनी चाहिए।

उपयुर्क्त तथ्यों का अमल अगर किया जाता है तो भारतीय साहित्य जन सामान्य तक पहुचने के लिए देर नही लगेगी। तथा राष्ट्र समृध्दि की ओर बढ़ेगा।

संदर्भ :

1) डॉ. रामविलास शर्मा : भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ।
2) डॉ. नगेंद्र : भारतीय साहित्य।
3) डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय : भारतीय साहित्य।
4) डॉ. प्रदीप श्रीधर : भारतीय साहित्य : अध्ययन की नई दिशाएँ।
5) स. सियाराम तिवारी : भारतीय साहित्य की पहचान।
6) डॉ. आर. आई. शांति : भारतीय साहित्य।
7) के. सच्चिदानंदन : भारतीय साहित्यः स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ।
8) डॉ. तनूजा मुजुमदार : भारतीय साहित्य कुछ परिदृश्य।
9) डॉ. मूलचंद गौतम : भारतीय साहित्य।

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com